

Free Mock Test

Test ID:- C23



ZONE TECH

Best Institute For Assistant & Junior Engineer

RPSC AE MAINS

OFFLINE & ONLINE TEST SERIES

SOLUTIONS

GENERAL HINDI

Full Length Test ID -C23

Exam Date :- **14 March 2025**

Click to Enroll <https://zonetech.in/rpsc-aen>

Full Syllabus Test Series Centers

जयपुर

जोधपुर

दिल्ली

उदयपुर

बीकानेर

कोटा

for more info Contact us at :

9828747676, 9462447676

अनुभाग - 3

टिप्पणी : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रत्येक प्रश्न के अंक प्रश्न के सामने अंकित हैं।

1. (क) 1
 - (i) उद्धार
 - (ii) उच्छिष्ट
- (ख) 1
 - (i) नि + आय
 - (ii) अन्त्य + अक्षरी
2. (क) 1
 - (i) परोपकार
 - (ii) कायर
- (ख) 1
 - (i) सम्
 - (ii) निर्
3. (क) 1
 - (i) वासुदेव
 - (ii) दैत्य
- (ख) 1
 - (i) उक
 - (ii) तम
4. 2
 - (i) भूमि, भू, धरा
 - (ii) रात, रात्रि, निशा
5. 2
 - (i) लाघव
 - (ii) पाश्चात्य
6. 2
 - (i) शत्रु - सम्बोधन
 - (ii) हिस्सा - कंधा



www.zonetech.in

ZONE TECH
Best Institute For Assistant & Junior Engineer



7. 2
- अग्रज
 - असहिष्णु
 - अपथ्य
 - अन्तःपुर
8. 2
- शृंगार
 - प्रोज्ज्वल
 - भृंग
 - ज्योत्स्ना
9. 2
- को
 - दूध
 - कवयित्री
 - वध किया
10. 4
- घमण्ड चूर होना
- कारगिल-युद्ध में परास्त होने के बाद पाकिस्तान की ऐंठ निकल गयी है।
 - क्रोध में आ जाना
- रामू करेला से चिढ़ता है। उसके सामने जब भी कोई करेला कहता है, वह ओठ चबाने लगता है।
 - थकान मिटाना
- 10 किमी. पैदल चलकर आया हूँ, जरा कमर तो सीधी करने दो।
 - धन-धान्य से सम्पन्न होना
- भारतवर्ष में कभी दूध की नदियाँ बहती थीं। यही देखकर अँग्रेज लालायित हुए और भारत में घुस आये।
11. 4
- विपत्ति पर विपत्ति आना
- अभी कुछ दिनों पहले लड़की की शादी में खर्च हुआ और अब पिताजी बीमार पड़ गये। सच ही कहा गया है- कंगाली में आटा गीला होता है।
 - अधिक परिश्रम के बाद साधारण लाभ
- रात-दिन परिश्रम करने के बाद मनोवांछित फल न मिलने पर वह बोला- खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
 - अभिमान से तिरस्कार करना/परिपूर्ण चीज की उपेक्षा करना
- स्वाभिमानी सेवक वीरेन्द्र अपने मालिक के तिरस्कार को सहन न कर सका इसीलिए क्रोध में आकर उसने अच्छी-खासी नौकरी छोड़कर भरी थाली में लात मार दी।
 - असमर्थ व्यक्ति बाते अधिक
- अगर तुम्हारे अन्दर सामर्थ्य है तो कुछ करके दिखाओ, डींगें हाँकने में क्या रखा है। इससे तो सिद्ध होता है-थोथा चना बाजे घना।



12.

4

- (i) मान लेना / सम्मिलित होना
- (ii) परिसीमन
- (iii) हताहत
- (iv) अनु संलग्नक
- (v) प्रेषण / रवानगी
- (vi) प्रतिवेदन / सूचना
- (vii) पृष्ठांकन करना
- (viii) परित्याग

अनुभाग - ब

अंक - 50

टिप्पणी : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं। निर्धारित अंक प्रत्येक प्रश्न के सामने अंकित है।

13.

(i)

नैतिक शिक्षा।

(ii)

हमारी संस्कृति में गुरु और शिष्य का सम्बन्ध बहुत ही सुन्दर और मीठा हुआ करता था।

(iii)

गुरु का शिष्य के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा करता था।

(iv)

प्राचीनकाल में गुरु-शिष्य का पिता-पुत्र जैसा आत्मीय और आध्यात्मिक सम्बन्ध हुआ करता था। इस कारण शिष्य पर गुरु के आचरण की गहरी छाप पड़ती थी, किन्तु आज की शिक्षा व्यापार बन चुकी है जिसमें चरित्र-गठन पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है। आज के छात्र पर शिक्षक का कोई नैतिक प्रभाव न होने के कारण दोनों के सम्बन्ध विकृत हो गये हैं।

14.

10

(i)

धर्म के दस लक्षण बताये गये हैं- धैर्य, क्षमा, इन्द्रियदमन, पवित्रता आदि परन्तु व्यावहारिक मानव जीवन में मानव का सबसे बड़ा धर्म है परोपकार, दूसरों की भलाई करना और सोचना। जिसमें परोपकार की भावना होती है, वहीं धर्म के सैद्धान्तिक लक्षणों से भी युक्त होगा - जैसे परोपकारी धैर्यवान होता है, क्षमाशील होता है, उसका आदर्श आचरण वाक्य होता है। कुल मिलाकर परोपकारी व्यक्ति हर तरह से समाज के उत्थान और उसके कल्याण में रत रहता है। भगवान बुद्ध, महात्मा गाँधी तथा अन्य महान् पुरुषों ने समाज में जो कुछ किया परहिताय, परसुखाय किया स्वहिताय और स्वान्तःसुखाय नहीं किया।

(ii)

जिस प्रकार एक व्यक्ति पाठशाला में शिक्षार्थी जीवन व्यतीत करता हुआ बहुत कुछ सीखता है उसी प्रकार जब मनुष्य विपत्ति से घिर जाता है तब उसे अनेक प्रकार के अनुभव होते हैं। वह विपत्तिकाल में अपने-पराये का भेद समझ जाता है तथा मुसीबतों को कैसे सहन किया जाता है, इसका भी उसे ज्ञान हो जाता है। इसीलिए कहा गया है कि विपत्ति जीवन की सर्वश्रेष्ठ पाठशाला है।



15.

प्रेषक-

डॉ. पी.एन. गुप्ता

प्रताप राजकीय महाविद्यालय

प्राचार्य

उदयपुरा

पत्रांक

दिनांक

प्रिय श्री प्रो. जैन,

इस महाविद्यालय ने 15 जनवरी, 2026 को 'विज्ञान और अहिंसा' विषय पर अखिल राजस्थान स्तर की एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया है। हमने इस सम्बन्ध में आपके महाविद्यालय को सूचना पहले ही भेज दी थी लेकिन अभी तक आपका प्रत्युत्तर प्राप्त नहीं हुआ है। आपसे व्यक्तिगत अनुरोध है कि आप इस प्रतियोगिता हेतु अपने महाविद्यालय से दो प्रतियोगियों के नाम भेजकर कार्यक्रम को सफल बनाने में आत्मीय सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

इसी आशा के साथ,

www.zonetech.in

प्रतिष्ठा में-

भवदीय

प्रो. डी.सी. जैन, प्राचार्य

ह. पी.एन. गुप्ता

ग्लोबल महाविद्यालय

जयपुर (राज.)

अथवा

परिवार कल्याण मंत्रालय

भारत सरकार

नई दिल्ली।

अनुस्मारक (स्मरण पत्र)

क्रमांक- परि./क./म./भा./स./नई दिल्ली-1035 दिनांक 26.01.2026

प्रेषक

मुख्य सचिव

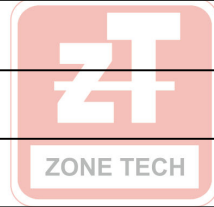
परिवार कल्याण मंत्रालय,

सेवामें,

अपर सचिव

जन स्वास्थ्य विभाग

जयपुर।



www.zonetech.in

विषय: सत्र 2024-25 की जनसंख्या की रिपोर्ट हेतु।

संदर्भ:- परि./क./म./भा./स./न/ दिनांक- 25.02.2026

महोदय,

आपका ध्यान हमारे पत्र क्र. 35/06/80 दिनांक 24 अप्रैल, 20... की ओर दिलाया जाता है। इसमें निवेदन किया गया था कि 25 मई, 20... तक गत वर्ष की जनसंख्या वृद्धि की रिपोर्ट देने की कृपा करें। किन्तु अब तक कोई उत्तर नहीं मिला है। आपसे पुनः निवेदन किया जाता है कि एक सप्ताह के भीतर रिपोर्ट भिजवाएँ।

भवदीय

..... हस्ताक्षर

(मोहन त्रिपाठी)

मुख्य सचिव, परिवार कल्याण मंत्रालय,

भारत सरकार।

16.

राजस्थान - सरकार

कार्यालय : जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक), कोटा।

क्रमांक : जिशिअ/कोटा/2003-04/1511

दिनांक: 20 जून, 2003

निविदा सूचना संख्या 5 वर्ष 2003-04

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्न हस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में निम्नलिखित सामान की आपूर्ति हेतु मोहरबन्द निविदाएँ आमन्त्रित की जाती हैं। इस हेतु प्रपत्र दिनांक 10 जुलाई 2003 को 3.00 बजे अपराह्न तक कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं और दिनांक 11 जुलाई 2003 को 3.30 बजे अपराह्न तक बंद लिफाफे में कार्यालय में जमा करवाये जा सकते हैं। दिनांक 13 जुलाई 2003 को 4.00 बजे अपराह्न उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जाएगी। सामान के बारे में पूर्ण विवरण किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय समय में निविदा शुल्क जमा कराकर कार्यालय से प्राप्त किए जा सकते हैं।

क्र.स. सामान का अनुमानित राशि धरोहर राशि रुपये निविदा-शुल्क सामान आपूर्ति की

वितरण

अवधि

www.zonetech.in

1. कम्प्यूटर 3.00 6000 100 2 माह

2. स्टील 2.00 4000 100 2 माह

आलमारी

3. स्टेशनरी 0.50 1000 50 1 माह

सामान

आवश्यक शर्तें-

- सशर्त निविदाएँ मान्य नहीं होगी।
- तार द्वारा प्राप्त निविदाएँ, विलम्ब से प्राप्त निविदाएँ मान्य नहीं होगी।
- बिना कारण बताए किसी निविदा अथवा समस्त निविदाओं को स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार निम्न हस्ताक्षरकर्ता का सुरक्षित है।

हस्ताक्षर

जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)

कोटा

अथवा

प्रेस विज्ञप्ति

राजस्थान सरकार

अल्पबचत निदेशालय, जयपुर

निःशुल्क उपहारा कूपन योजना के पुरस्कारों का ड्रॉ 8 अक्टूबर, 2025 को जयपुर में निकाला जा चुका है। पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की सूचना सभी प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों में 12 अक्टूबर, 2026 को प्रकाशित की जा चुकी है। योजना में प्रावधान था कि ड्रॉ निकालने के दिनांक से 30 दिवस के अन्दर पुरस्कार विजेता के द्वारा अपना कूपन प्रस्तुत करने पर पुरस्कार दिया जाएगा। इस सम्बन्ध में एक बार फिर सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पुरस्कारों से सम्बन्धित दावे 7 नवम्बर, 2026 तक निदेशक, अल्पबचत, राजस्थान जयपुर के कार्यालय में प्रस्तुत कर सकते हैं। इसके बाद प्रस्तुत दावों पर विचार नहीं किया जाएगा।



www.zonetech.in

हस्ताक्षर

.....

ZONE TECH
Best Institute For Assistant & Junior Engineer

निदेशक, अल्पबचत



हिन्दी अनुवाद

“अब इस बात से निराश होने की आवश्यकता नहीं, कि मानव समुदाय में अभी तक अपने वास्तविक हितों को पहचानने की योग्यता की कमी है। हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि मानव जाति अभी बहुत अविकसित है। सी.ई.एम. जोड़ ने ‘सभ्यता की कहानी’ नामक अपनी एक लघुकथा में इसका आकलन करते हुए बताया है कि यदि हम धरती पर प्राणिजगत के सम्पूर्ण अतीत की अवधि सौ वर्ष मानें तो उसमें मानव विकास की अवधि केवल एक महीना ही निकलेगी और उस एक महीने में से सभ्यता के नाम पर केवल सात या आठ घण्टे ही होंगे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि अब तक हमें कुछ सीखने के लिए बहुत ही कम समय मिला है तथा हमें और अधिक सीखने के लिए असीमित समय की आवश्यकता है? क्योंकि मानव सभ्यता का पिछला इतिहास यदि केवल सात-आठ घण्टे तक सीमित है, तो इसी अनुपात से उसका भविष्य (जब तक सूर्य एकदम शीतलन या एकदम गर्म होकर धरती पर जीवन को असम्भव न कर दे) सैकड़ों हजारों वर्षों का माना जा सकता है।”

अनुभाग – स

अंक - 20

18. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए- (शब्द सीमा : लगभग 500 शब्द)

20

1. पर्यावरण : संरक्षण और प्रदूषण की समस्या

प्रस्तावना—पर्यावरण-संरक्षण और प्रदूषण की समस्या पर चर्चा करने से पूर्व हमें पर्यावरण और प्रदूषण के अर्थ जानना आवश्यक है। पर्यावरण में प्रकृति-प्रदत्त वायु, भूमि, जल, आकाश, वृक्ष आदि वस्तुएँ आती हैं जो प्रकृति ने मानव को निःशुल्क प्रदान की है। मनुष्य द्वारा इन प्रकृति, प्रदत्त संसाधनों का अंधाधुन्ध दोहन प्रदूषण कहलाता है। प्रमुख रूप से प्रदूषण को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जिसमें प्रमुख रूप से वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण, भूमि-प्रदूषण तथा ध्वनि-प्रदूषण आते हैं।

ये सभी प्रकार के प्रदूषण आज प्रकृति में इस प्रकार से अपने पाँव पसार रहे हैं, कि इनकी सीमा के बारे में अनुमान लगाना भी कठिन है। सभी प्रकार के प्रदूषण वातावरण में हानिकारक तत्वों को उत्पन्न करते हैं और मनुष्य के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अभाव पैदा करते हैं। यथा-वाहनों से उड़ता धुआँ वातावरण में जीवनदायी ऑक्सीजन की निर्धारित मात्रा को कम करता है। इसी प्रकार कल-कारखानों से निकला प्रदूषित जल शुद्ध जल-स्रोतों में मिलकर पेयजल को दूषित कर देता है। अतः मानव-सभ्यता की सुरक्षा तथा उत्तम स्वास्थ्य की दृष्टि से उन उपायों पर अमल करना अत्यन्त आवश्यक है जिनसे पर्यावरण को संरक्षित किया जाये और उसको प्रदूषित होने से रोका जाये।

बढ़ता हुआ प्रदूषण—मानव कई शताब्दियों से प्राकृतिक संसाधनों का अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दोहन करता रहा है। वर्तमान में बदले हुए सामाजिक-आर्थिक परिवेश ने मनुष्य को प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुन्ध दोहन के लिए दुष्प्रेरित किया है, जिसके दुष्परिणाम अब आने लगे हैं। मनुष्य ने अपने निजी स्वार्थों की बलिवेदी पर हरे-भरे वनों को लील लिया है, जिसके कारण कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि और अकाल का सामना करना पड़ता है। ये सभी समस्याएँ पिछले कुछ वर्षों से दानवी रूप धारण कर चुकी हैं। प्रमुख मंचों पर पर्यावरण चर्चा का विषय बन गया है और उसे पाठ्यक्रमों में प्रमुखता दी जाने लगी है। पर्यावरण-सुरक्षा की दृष्टि से मई 1986 में भारतीय संसद ने पर्यावरण सुरक्षा-अधिनियम पारित किया है जिसके अनुसार हवा, पानी, जमीन और जंगलों के लिए आधुनिक उद्योगों, शहरी मल, कचरे तथा अनियमित कटाव से पैदा होने वाले खतरों पर प्रभावी रोकथाम के उपाय किये गये हैं।

प्रदूषण के कारण—पर्यावरण-प्रदूषण के अनेक कारण हैं। सबसे प्रमुख समस्या जनसंख्या-विस्फोट की है। वर्तमान आबादी में प्रति मिनट 150 की दर से वृद्धि हो रही है। यदि यही दर जारी रही तो अगली शताब्दी के अंत तक विश्व की जनसंख्या दस अरब तक पहुँच जायेगी। अनियन्त्रित जनसंख्या-वृद्धि के कारण महँगाई बढ़ी है, जिससे रह-सहन में गिरावट आयी है। आवास-योग्य भूमि की अनुपलब्धता से शहरों में जनसंख्या-घनत्व बढ़ा है तथा गाँवों में रोजगार की तलाश में आये लोगों को गन्दी बस्तियों और झुग्गी-झोपड़ियों में रहने को विवश होना पड़ता है।

पर्यावरण-प्रदूषण का एक अन्य प्रमुख कारण हमारी ऊर्जा की बढ़ती हुई आवश्यकताएँ भी हैं। ईंधन और इमारती उपयोग के लिए वनों का अन्धाधुन्ध दोहन हुआ है। इसी प्रकार खनिज तेल व भूमिगत कोयले का दोहन भी उपभोक्तवादी संस्कृति के कारण अनियन्त्रित रूप से किया जाता है।



प्राप्त अनुमानों के अनुसार खनिज कोयला अगले कई वर्षों तक प्राप्त हो सकेगा, परन्तु खनिज तेल के भण्डार समिति हैं। और अगले 40-45 वर्षों में प्रायः समाप्त हो जायेंगे। अतः आवश्यकता इस बात की है कि ऊर्जा के परम्परागत स्रोतों पर निर्भरता कम करके वैकल्पिक स्रोतों का विकास किया जाये और इसे जनसामान्य तक पहुँचाने का प्रयास किया जाये।

प्रदूषण की सबसे प्रमुख समस्याओं में से एक है ग्रीन हाउस गैसों के प्रभाव। औद्योगिक इकाइयों से निकली जहरीली गैसों और वाहनों के धुएँ में व्याप्त कार्बन मोनोऑक्साइड गैस के प्रभाव से पृथ्वी के वायुमण्डल का तापमान बढ़ रहा है और हानिकारक गैसों के प्रयोग से पृथ्वी के सुरक्षा कवच ओजोन परत को गम्भीर क्षति पहुँची है।

कई जगह तेजाबी वर्षा का सामना करना पड़ रहा है और पर्यावरण-संतुलन को गम्भीर नुकसान पहुँचा है। पर्यावरण-असन्तुलन को भारत में मानसून-चक्र में अनियमितता से जोड़कर देखा जा सकता है। यदि प्रदूषण इसी गति से बढ़ता रहा तो मानव और मानव-सभ्यता दोनों को अकाल्पनिक संकटों का सामना करने को विवश होना पड़ेगा।

प्रदूषण निवारण के उपाय-पर्यावरण और औद्योगिक विकास दोनों के उचित सामंजस्य से ही पर्यावरण-संरक्षण संभव है। आवश्यकता इस बात की है कि हम विज्ञानी और तकनीकी का 'विनाश-रहित विकास' करने का प्रयास करें जिससे पर्यावरण का संतुलन बना रहे और जीव-जन्तुओं और मानव-अस्तित्व की रक्षा की जा सके।

सबसे अधिक ध्यान जनसंख्या को नियन्त्रित करने की ओर देना चाहिए। परिवार-नियोजन की शिक्षा को जन-जन तक पहुँचा जाये। पाठ्यक्रम में यौन शिक्षा को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाये। शत-प्रतिशत प्रौढ-शिक्षा एवं साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ठोस कार्य-नीति बनाई जाये। साथ ही प्राकृतिक संसाधनों के उचित इस्तेमाल के बारे में विद्यार्थियों को शिक्षित किया जाये।

ऊर्जा के परम्परागत स्रोतों, यथा-जलाने की लकड़ी आदि पर निर्भरता कम करने के लिए रसोई गैस का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाये। कारखानों की चिमनियों से उठने वाले धुएँ को वृक्षारोपण द्वारा शुद्ध किया जाये। मशीनों की तकनीक में आवश्यक सुधार करने ध्वनि-प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

उपसंहार-पर्यावरण-प्रदूषण मानव और जीवधारियों के लिए भयंकर चुनौती है। मनुष्य अपने बुद्धि-चातुर्य और दूरदृष्टि से प्रगति के रथ को गतिशील बनाये हुए है। सभी वैज्ञानिक इस विषम समस्या का हल खोजने के लिए विकल है। पूर्व आशा है कि भविष्य में पर्यावरण-प्रदूषण के सभी कारणों का स्थायी समाधान हो सकेगा और उन पर प्रभावी नियन्त्रण प्राप्त किया जा सकेगा।

स्मरण रखना चाहिए कि पर्यावरण-संरक्षण से ही अपना और पृथ्वी के सभी जीव-जन्तुओं का भविष्य सुरक्षित है और सभी को सदा पर्यावरण-संरक्षण के प्रति सजग रहना चाहिए। अन्त में यही कह सकते हैं-

पर्यावरण को शुद्ध बनाओ, जीवन में खुशहाली पाओ।

बढ़ता प्रदूषण, घटती आयु, कारण एक अशुद्ध जलवायु।

◆◆◆

2. ग्लोब वार्मिंग : विश्व की सर्वाधिक खतरनाक समस्या

1. पर्यावरण की परिभाषा
2. औद्योगिक क्रांति एवं पर्यावरण प्रदूषण की विस्फोट होती समस्या
3. प्रकृति में मनुष्य का अनावश्यक हस्तक्षेप।
4. पृथ्वी के तापमान में वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) के कारणों की समीक्षा।
5. ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से निपटने हेतु विश्व स्तर पर किए जाने वाले विविध उपाय एवं सम्मेलन।

प्रकृति ने सम्पूर्ण जीवमण्डल के लिए स्थल, जल और वायु के रूप में एक विस्तृत आवरण निर्मित किया है, जिसे हम 'पर्यावरण' की संज्ञा देते हैं। पर्यावरण के संतुलन के लिए प्रकृति ने कुछ नियम भी निर्धारित किए हैं, किन्तु जब से इस पृथ्वी पर मनुष्य का अवतरण हुआ है, तब से पर्यावरण संतुलन के प्राकृतिक नियमों का खुला उल्लंघन शुरू हुआ है और निरंतर प्रकृति की अनदेखी के कारण आज हमारे पर्यावरण को अनेक समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। वायु प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि ने सम्मिलित रूप से सम्पूर्ण वातावरण को प्रदूषित कर दिया है और इसका परिणाम यह हुआ है कि प्रकृति-प्रदत्त जीवनदायी वायु, वह था- विश्वव्यापी तापमान वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग)। वातावरण में तापमान की वृद्धि वर्तमान विश्व के लिए सर्वाधिक चिंतनीय विषय है, क्योंकि जिस गति से इसकी वृद्धि हो रही है, वह सम्पूर्ण जीव-समुदाय के लिए घातक सिद्ध हो रही है।

व्यापक उत्परिवर्तनों के बावजूद लम्बी अवधि तक मनुष्य एवं पर्यावरण का संबंध लगभग सौहार्दपूर्ण रहा है और पर्यावरण लगभग अपरिवर्तित रहा है। पर्यावरण का संतुलन बिगड़ना शुरू हुआ पश्चिमी देशों की औद्योगिकी क्रांति के बाद से। मनुष्य की आर्थिक व भौतिक समृद्धि प्राप्त करने की आकांक्षा दिन-ब-दिन बढ़ती गई और परिणामों को अनदेखा करते हुए वह प्रकृति तथा पर्यावरण का शोषण करने लगा।

औद्योगिक क्रांति ने वायु-प्रदूषण को चिंतनीय स्थिति तक पहुँचा दिया। नवीन उद्योगों में कोयले का अंधाधुंध प्रयोग शुरू हुआ। कोयले का प्रयोग विद्युत उत्पादन के लिए भी होने लगा। इसके परिणामस्वरूप 19वीं और 20वीं सदी के आरंभ में यूरोप एवं अमेरिका के नगरों पर काला आवरण-सा छाने लगा। सेंट पीटर्सबर्ग एवं पेंसिलवेनिया जैसे औद्योगिक नगरों में तो वायु प्रदूषण की मात्रा इतनी अधिक हो जाती थी कि वाहन चालकों को दिन में भी हेडलाइट का उपयोग करना पड़ता था। इस संदर्भ में ध्यातव्य है कि, जिस गति से औद्योगीकरण की प्रक्रिया बढ़ रही है, उससे न्यून गति नहीं है वायु प्रदूषण में वृद्धि की।

मनुष्य की विलासिता की प्रवृत्ति ने अभी भी उसे प्रदूषण की गंभीरता से अवगत होने से रोके रखा है। प्रशीतन के विश्वव्यापी अनियंत्रित प्रयोग ने वातावरण में क्लोरोफ्लोरोकार्बन गैस की मात्रा बढ़ा दी है। वस्तुतः मनुष्य प्रकृति से अपने अनुकूलन के बदलने प्रकृति को अपने अनुकूलन बनाने की जितनी चेष्टा करेगा, वह पर्यावरण को और उसके परिणामस्वरूप चक्रीय शृंखला में अपनी क्षमता को ही नुकसान पहुँचाना शुरू कर देगा।

आज मनुष्य के अनियंत्रित हाथ एवरेस्ट की चोटी से लेकर समुद्री तल तक के लिए प्रदूषण का संकट पैदा करने लगे हैं। वह मात्र अपने अहं की तुष्टि एवं झूठे प्रभाव की प्रतिष्ठा के लिए आणविक विस्फोट की अनवरत शृंखला चला रहा है। जिसके रेडियोधर्मी प्रभाव कई पीढ़ियों के लिए शारीरिक व मानसिक विकृति के वाहक बन सकते हैं। मनुष्य ने ऐसे ही विस्फोटों एवं अन्य औद्योगिक तथा रासायनिक कारणों से प्रकृति के गैसीय संतुलन को कुप्रभावित किया है और उससे पृथ्वी का तापमान तीव्र गति से बढ़ने लगा है, जिससे बर्फ के पिघलने एवं उससे भू-क्षेत्रों के जलमग्न हो जाने की आशंका प्रकट की जाने लगी है। पर्यावरणीय कुप्रभावों की वजह से ही वातावरण अहं हमेशा असामान्य-सी स्थिति में नजर आता है- कभी गर्मी हद से अधिक बढ़ जाती है, तो कभी ठंड असामान्य रूप से बढ़ जाती है, वर्षा का अनियमित हो जाना भी पर्यावरणीय कुप्रभाव का ही सूचक है।

पृथ्वी के पर्यावरण में हस्तक्षेप के विनाशकारी परिणाम तापमान वृद्धि के रूप में सामने आ रहे हैं। यदि विश्व-वायुमंडल में कार्बन-डाई-ऑक्साइड, मिथेन और कार्बन-मोनो-आक्साइड आदि गैसों छोड़े जाने की वर्तमान गति बनी रही या इसमें और तीव्रता आ गयी, तो 21वीं सदी के मध्य (2050) तक भू-मण्डल का तापमान 3.5 डिग्री बढ़ जायेगा। तापमान वृद्धि से आर्कटिक और अंटार्कटिका की बर्फ टोपियों तथा हिमनद पिघलनें लगेंगे, जिसके परिणाम कितने घातक होंगे, उसकी कल्पना प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है। एक अनुमान के अनुसार, जिस गति से तापमान में वृद्धि हो रही है, उससे समुद्र के जल स्तर में 3 फीट की वृद्धि हो सकती है। हाल में वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययन से ज्ञात होता है कि पृथ्वी के तापमान में वृद्धि हो रही है। तापमान वृद्धि का कारण समुद्रों की कार्बन-डाई-ऑक्साइड ग्रहण करने की क्षमता में 50 प्रतिशत तक की कमी हो सकती है। इससे ग्रीन हाउस गैसों का और अधिक विकास होगा और तापमान में और अधिक वृद्धि होगी। समुद्र प्रतिवर्ष वायुमण्डल से लगभग दो अरब टन कार्बन-डाई-ऑक्साइड को अपने अंदर समेट लेते हैं और इस प्रकार वे ग्रीन हाउस प्रभाव को कम करते हैं। यहाँ एक तथ्य ध्यातव्य है कि, जीवाश्म ईंधनों के कारण वायुमण्डल में छह अरब टन कार्बन जाता है। वैज्ञानिकों ने अनुमान किया है कि अगली डेढ़ शताब्दियों में कार्बन स्तर प्रतिवर्ष एक प्रतिशत बढ़ जायेगा और इस कारण वायुमंडल में गैस की सार्द्रता चार गुना बढ़ जायेगी।

तापमान वृद्धि के प्रति अनदेखी का स्वरूप तब और अधिक भयावह प्रतीत होता है, जब यह तथ्य सामने आता है कि अमेरिका तथा जापान सहित यूरोप के 21 देश (औद्योगिक दृष्टि से विकसित) सम्पूर्ण विश्व के 20वें भाग में फैले हैं, किन्तु वे वातावरण में कार्बन-डाई-ऑक्साइड का 80 प्रतिशत छोड़ते हैं। वायुमंडल में छोड़ी जाने वाली ग्रीन हाउस गैसों का लगभग 25 प्रतिशत तो केवल अमेरिका द्वारा ही छोड़ा जाता है। पर्यावरण क्षरण को रोकने के लिए पहले तो रियो डि जेनेरो में वर्ष 1992 में फिर वर्ष 1997 में क्योटो में और वर्ष 1998 में ब्यूनर्स आयर्स में महासम्मेलन का आयोजन किया जा चुका है। इन सम्मेलनों में सर्वसम्मति से कोई निर्णय नहीं लिया जा सकता, क्योंकि अमेरिका और जापान जैसे देशों ने अपना कोई स्पष्ट रवैया नहीं अपनाया। अमेरिका का तो यहां तक कहना है कि तापमान या मौसम परिवर्तन के लिए पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है, इसलिए ग्रीन हाउस गैस के नियंत्रण के लिए कानून बनाने की कोई आवश्यकता नहीं। प्रमुख औद्योगिक देश इसी तर्क के आधार पर ग्रीन हाउस के विस्तार पर रोक लगाने या उसमें कटौती करने के लिए 2010 ई. से तैयार हैं। इस संदर्भ में एक तथ्य और ध्यातव्य है कि, बहुत से देश कह रहे हैं कि चीन और भारत तीव्र गति से अपना औद्योगिक विकास कर रहे हैं, इसलिए वे अपनी औद्योगिक गतिविधियों को नियंत्रित नहीं कर सकते। ग्रीन हाउस गैसों के कुल अनुपात का 16.5 प्रतिशत इन दोनों देशों द्वारा उत्सर्जित किया जाता है। किन्तु, यह तर्क देते समय वे यह भूल जाते हैं कि विश्व की कुल जनसंख्या का 16 प्रतिशत भाग भारत में निवास करता है, जबकि कुल जहरीली गैसों का मात्र 3.5 प्रतिशत ही उसके द्वारा उत्सर्जित किया जाता है।



3. एक देश, एक चुनाव

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कई मौकों पर 'एक देश, एक चुनाव' की आवश्यकता पर बात की है, जिसका उल्लेख पहली बार उनके वर्ष 2014 के लोकसभा चुनावों के घोषणा-पत्र में भी था। एक देश, एक चुनाव की बात करने से आशय है कि लोकसभा और राज्य विधानसभा चुनावों को एक ही समय पर आयोजित किया जाए।

भारत सरकार ने 2 सितम्बर, 2023 को एक देश, एक चुनाव पर एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया, जिसके अध्यक्ष पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द हैं। इस समिति के सदस्य गुलाम नबी आजाद, संजय कोठारी, अमित शाह, एन.के. सिंह, सुभाष कश्यप और हरीश साल्वे हैं।

इस समिति ने 'एक देश, एक चुनाव' की सम्भावनाओं को खोजने के लिए रिपोर्ट तैयार करके राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को सौंपी है। इस पैनल ने 18,626 पेजों में अपनी सिफारिशें प्रस्तुत की हैं। अगर सरकार इन सिफारिशों को मानती है, तो वर्ष 2029 में पहली बार लोकसभा और विधानसभा के चुनाव साथ-साथ कराए जा सकते हैं। समिति ने कहा है कि पहले चरण में लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एकसाथ कराए जा सकते हैं। इसके बाद 100 दिनों के अन्दर, दूसरे चरण में स्थानीय निकायों के चुनाव कराए जा सकते हैं।

सरल शब्दों में एक देश, एक चुनाव का अर्थ है कि सभी भारतीय मतदाता, सभी स्तरों के चुनावों में अपने प्रतिनिधियों को चुनने के लिए यदि एक ही समय में मतदान नहीं कर सकते, तो एक वर्ष की समयावधि में मतदान करेंगे।

एक समाचार चैनल के अनुसार, समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा, "समिति की सर्वसम्मत राय है कि एकसाथ चुनाव होने चाहिए।" समिति ने कई संवैधानिक संशोधनों की सिफारिश की है, जिनमें से अधिकांश के लिए राज्य के अनुसमर्थन की आवश्यकता नहीं होगी। समिति ने अपनी सिफारिश में कहा कि भारत के राष्ट्रपति, लोकसभा और विधानसभा चुनाव एकसाथ कराने के उद्देश्य से महासभा के बाद लोकसभा की पहली बैठक की तारीख की अधिसूचना जारी कर सकते हैं।

समिति ने लोकसभा और विधानसभा चुनावों के साथ-साथ पंचायतों और नगर पालिकाओं में चुनावों के लिए अनुच्छेद-324 (ए) लागू करने की भी सिफारिश की। समिति ने कहा कि संसद यह सुनिश्चित करने के लिए एक कानून पारित कर सकती है कि नगरपालिका और पंचायत चुनाव आम चुनावों के साथ ही हों। समिति ने रिपोर्ट में यह कहा है कि एकसाथ चुनाव कराने से विकास प्रक्रिया और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा मिलेगा, लोकतान्त्रिक परम्परा गहरी होगी और भारत की आकांक्षाओं को साकार करने में मदद मिलेगी। रिपोर्ट में लोकसभा, विधानसभा और स्थानीय निकाय चुनाव कराने के लिए एकल यानी साझा मतदाता सूची तैयार करने की बात कही गई है। इस विचार को समझाने के लिए समिति ने हितधारकों और विशेषज्ञों के साथ व्यापक परामर्श और 191 दिनों के शोध कार्य के बाद रिपोर्ट को तैयार किया।

ओपी रावत ने बताया कि चुनाव आयोग ने केन्द्र सरकार को दोनों चुनाव साथ कराने के लिए संविधान के 5 अनुच्छेदों में संशोधन करने की सलाह दी है। इसके साथ ही उन्होंने निर्वाचन आयोग के द्वारा सुझाए गए विश्वास प्रस्ताव के नियमों में भी बदलाव की बात की है। इसके अतिरिक्त उन्होंने बताया कि एक देश, एक चुनाव के लिए करीब 15 लाख नए ईवीएम (EVMs) और वीवीपैट (VVPAT) की आवश्यकता होगी।

एक देश, एक चुनाव के लाभ

- **सामाजिक एकजुटता** 'एक देश, एक चुनाव' की प्रक्रिया देश की राजनीतिक एकता और सामाजिक बढ़ावा देती है। मतदाता को एकसाथ चुनाव के लिए मतदान करने का अवसर मिलता है, जिससे वे अपने राजनीतिक अधिकार का सही उपयोग कर सकते हैं।
- **कम चुनाव लागत** एकसाथ चुनाव कराने से चुनाव आयोजन की लागत कम होती है, क्योंकि विभिन्न चुनावों की अलग-अलग प्रणालियों को संचालित करने की आवश्यकता नहीं होती।
- **समय की बचत** अलग-अलग चुनावों के आयोजन के लिए समय की बचत होती है, जिससे सरकार और राजनीतिक पार्टियाँ अधिक समय और उनकी ऊर्जा को विकास कार्यों में लगा सकती हैं।
- **राजनीतिक स्थिरता** एकसाथ चुनाव कराने से राजनीतिक स्थिरता बढ़ती है, क्योंकि नियमित अन्तरालों पर होने वाले चुनावों की तुलना में, उन्हें ज्यादा नियमितता से आयोजित किया जाता है।

हालाँकि, इस उपाय के लाभों के साथ-साथ इसकी कई चुनौतियाँ भी हैं; जैसे- संवैधानिक संशोधन की आवश्यकता, राज्यों के बीच के विवादों का समाधान और चुनाव प्रक्रिया की संगठनशीलता। इन सभी मुद्दों का समाधान करने के लिए ध्यानपूर्वक योजना बनानी और समाधान खोजना आवश्यक होगा।



केन्द्र सरकार एक देश, एक चुनाव के पक्ष में हो सकती है, लेकिन इसके विरोध में भी कई मजबूत तर्क हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं

- **राष्ट्रीय-क्षेत्रीय पार्टियों में मतभेद** विरोधी दल कहता है कि एक देश, एक चुनाव की प्रक्रिया से राष्ट्रीय पार्टियों की लाभ हो सकता है, जबकि क्षेत्रीय पार्टियों को नुकसान हो सकता है। यह स्थिति राज्य की स्वतन्त्रता को कम कर सकती है और राज्यों के हित में असमानता पैदा कर सकती है।
- **चुनाव नतीजों में देरी** एक देश, एक चुनाव की प्रक्रिया में चुनाव नतीजों में देरी हो सकती है, जो राजनीतिक अस्थिरता और सार्वजनिक विश्वास में कमी ला सकती है।
- **संवैधानिक और संरचनात्मक चुनौतियाँ** एक देश, एक चुनाव को लागू करने के लिए संवैधानिक और संरचनात्मक चुनौतियाँ होंगी; जैसे- संविधान में संशोधन की आवश्यकता और राज्यों के बीच विवादों का समाधान।

यद्यपि एक देश, एक चुनाव के पक्ष में भी तर्क हैं, लेकिन इस प्रस्ताव के पीछे की भावना लोकतन्त्र को मजबूत करना है, जिससे राजनीतिक प्रक्रिया को अधिक स्वायत्तता, स्थिरता और निष्पक्षता मिल सके। इस प्रस्ताव के लागू होने से पहले सभी सम्भावित प्रभावों को ध्यान में रखकर सरकार को योजना बनानी होगी, जिससे इसका सांविधानिक, संरचनात्मक और राजनीतिक प्रभाव ध्यान में रखा जा सके।

4. आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स (एआई) मशीनों द्वारा मानव बुद्धि का अनुकरण है। यह वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी और नवाचार की दुनिया में सबसे तीव्र विकास कर रहा है। इसीलिए आज के युग को आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का युग कहा जाता है। यह विभिन्न प्रकार की चुनौतियों व संकट को हल कर सकता है, लेकिन साथ ही मानव समाज के लिए संकट भी बन सकता है, जिस कारण इसके प्रयोग को लेकर सावधानी भी बरतने की आवश्यकता है।

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का शाब्दिक अर्थ कृत्रिम बुद्धिमत्ता होता है अर्थात् कृत्रिम तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता है, यह एक ऐसी तकनीक है, जिसमें एक कम्प्यूटर अपने प्रोग्राम में दिए जा रहे निर्देशों को समझने के बाद उन्हें संरक्षित करता है और उसके आधार पर भविष्य की आवश्यकताओं को समझते हुए निर्णय लेता है तथा उसके अनुसार कार्य करता है। इसके माध्यम से अब मशीनों के बीच संवाद करना सम्भव हो गया है। इस तकनीक के अन्तर्गत स्पीच रिकग्निशन, विजुअल परसेप्शन, लैंग्वेज आइडेण्टिफिकेशन और डिसिजन मेकिंग आदि का वर्णन किया जा सकता है।

इस तकनीक के जनक जॉन मैकार्थी हैं। इस तकनीक ने रोबोटिक्स क्षेत्र में क्रान्ति ला दी। इसके माध्यम से कम्प्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर संचालित करने की कोशिश की जाती है, जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क कार्य करता है। यह पूर्णतः प्रतिक्रियात्मक, सीमित स्मृति, आत्म-चेतन एवं मस्तिष्क सिद्धान्त पर कार्य करता है।

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का विकास

यद्यपि आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का जनक जॉन मैकार्थी को कहा जाता है, लेकिन इनके दोस्तों मार्विन मिंस्की, हर्बर्ट साइमन, एलेन नेवेल आदि ने भी इस शोध कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस तकनीक का विकास 1950 के दशक में ही प्रारम्भ हो गया था, लेकिन इसकी महत्ता को 1970 के दशक में पहचान मिली। जब जापान ने सर्वप्रथम इसकी पहल की और वर्ष 1981 में फिफ्थ जनरेशन नामक योजना की शुरुआत की थी। इसमें सुपर-कम्प्यूटर के विकास के लिए 10 वर्षीय कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी।

ब्रिटेन ने इसके लिए शैल्वी नाम का एक प्रोजेक्ट बनाया। यूरोपीय संघ ने भी इस सन्दर्भ में एस्पिरट नाम से एक कार्यक्रम की शुरुआत की। वर्ष 1983 में कुछ निजी संस्थाओं ने मिलकर आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स पर लागू होने वाली उन्नत तकनीकों, जैसे वेरी लार्ज स्केल इण्टीग्रेटेड सर्किट का विकास करने के लिए एक माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी की स्थापना की।

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के प्रकार

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के प्रकार निम्नलिखित हैं

- **टाइप 1** : रिएक्टिव मशीन यह मशीन स्थितियों पर प्रतिक्रिया कर सकती है। ऐसी मशीनों में मेमोरी की कमी होती है। यह सभी सम्भावित विकल्पों का विश्लेषण करती है और सर्वश्रेष्ठ को चुनती है।
- **टाइप 2** : सीमित मेमोरी यह भविष्य के लोगों को सूचित करने के लिए पिछले अनुभवों का उपयोग करने में सक्षम होती है। इसका उदाहरण सेल्फ ड्राइविंग कार हो सकता है। ऐसी कारों में निर्णय लेने की प्रणाली होती है।



- **टाइप 3 :** मन का सिद्धान्त यह दूसरों को समझने के लिए सन्दर्भित करता है। इस प्रकार का आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स अभी तक उपलब्ध नहीं है।
- **टाइप 4 :** सेल्फ- अवेयरनेस यह आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का उच्चतम और सबसे परिष्कृत स्तर है। ऐसी प्रणालियों में स्वयं की भावना होती है। इसके अतिरिक्त उनके पास जागरूकता, चेतना आदि होती है।

इस प्रकार की तकनीक वर्तमान में नहीं है, परन्तु इस क्षेत्र में शोध चल रहा है। यह तकनीक निश्चित रूप से एक क्रान्ति होगी। इस प्रकार, कहा जा सकता है कि जैसे-जैसे कम्प्यूटर साइंस और तकनीक का विकास हो रहा है, वैसे-वैसे आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के क्षेत्र में भी नवीन प्रयोग हो रहा है।

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के लाभ/अनुप्रयोग

- इस तकनीक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपयोग स्वास्थ्य क्षेत्र में हो सकता है। इस तकनीक से सर्जरी, पर्यवेक्षण आदि में मदद मिल सकती है, साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में भी इसकी मदद से इलाज किया जा सकता है। इसके द्वारा कीटनाशकों तथा उर्वरकों के दुरुपयोग को रोका जा सकता है। इसके माध्यम से विनिर्माण उद्योग में क्रान्ति आने की सम्भावना है।
- रक्षा की दृष्टि से भी इस तकनीक का काफी महत्व है। उदाहरण के लिए, युद्ध में या सीमा पर सेना के जवानों की जगह रोबोट का प्रयोग किया जा सकता है। साथ ही साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में धोखाधड़ी का पता लगाना, ऑनलाइन फ्रॉड आदि पर नियन्त्रण किया जा सकता है।
- शिक्षा के क्षेत्र में यह महत्वपूर्ण हो सकता है, क्योंकि यह शिक्षण प्रबन्धन जैसे कार्यों को सुलभ बना सकता है, यह ग्रेडिंग प्रणाली के संचालन में सहायक होकर समय की बचत करा सकती है।
- यह मनुष्यों की तुलना में जोखिमपूर्ण कार्यों को आसानी से कर सकती है। इसके कार्यों में गलती की सम्भावना कम होगी। जटिल सॉफ्टवेयर को समझकर सरल बनाया जा सकता है, जिससे संसाधन तथा समय के व्यय को कम किया जा सकेगा।
- रोबोटिक्स और वर्चुअल रियलिटी जैसी तकनीकों के प्रयोग से कार्य करने के तरीकों में बदलाव आता है, जिससे उत्पादन एवं निर्माण के तरीकों में क्रान्तिकारी परिवर्तन देखने को मिलता है।
- वर्तमान में वित्तीय संस्थानों और बैंकिंग संस्थानों द्वारा डेटा को व्यवस्थित और प्रबन्धित करने के लिए इस तकनीक का उपयोग किया जाता है। आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स खनिज संसाधनों की खोज में भी मदद करता है। साथ ही ऊर्जा क्षेत्र में इसके सम्भावित उपयोग से बिजली सन्तुलन एवं उपयोग दक्षता में वृद्धि होती है।
- आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का प्रयोग स्वचालित ड्राइवर ऑटोनोमस ट्रेकिंग, डिलीवरी व बेहतर यातायात प्रबन्धन में होता है। साथ ही स्मार्ट शहरों और आधारभूत ढांचे के विकास में भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। पूर्व मुख्य न्यायाधीश बोबडे ने भी इसकी वकालत की है और कहा कि इसको अपनाने से न्याय मिलने में देरी नहीं होगी।

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के नकारात्मक पक्ष

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स को अपनाने से बेरोजगारी बढ़ने की सम्भावना अधिक होती है। विशेषकर डेटा एण्टी क्लर्क, अकाउण्ट क्लर्क जैसे व्हाइट कॉलर जॉब इसमें शामिल हैं। भारत में भी बैंकों द्वारा आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स मशीन के प्रयोग के कारण बैंकिंग क्षेत्र में 7% नौकरी की कमी हुई है।

यदि हम इस तकनीकी पर अधिक निर्भर हो गए, तो हम अपनी रचनात्मकता को खो देंगे। यह तकनीकी बहुत ही खर्चीली होती है। किसी भी मशीन में भावना या नैतिक मूल्य नहीं होता है, जिस कारण वह सही और गलत में अन्तर नहीं कर पाती है। यही बात इस मशीन पर भी लागू होती है। इस बात की सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता है कि ये मशीनें स्वचालित हथियार बना लें और मानव जाति का विनाश कर दें। आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स से निजता का खतरा बढ़ जाता है।

भारत में आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स की स्थिति

वर्तमान में भारत में लगभग 40-42 हजार आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स प्रोफेशनल्स कार्य कर रहे हैं। भारत में बंगलुरु शहर आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का प्रमुख केन्द्र बन गया है। भारत में लगभग एक हजार कम्पनियाँ आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का प्रयोग अपने प्रतिदिन के कार्यों में कर रही हैं। नैसकॉम तथा फिक्की की एक रिपोर्ट के अनुसार, आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के कारण भारत के कुछ प्रमुख औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों में तकनीकी विस्तार होगा तथा इससे रोजगार सृजन में बढ़ोत्तरी होगी। भारत की कई ई-कॉमर्स कम्पनियाँ उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का प्रयोग कर रही हैं।



आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के क्षेत्र में भारत सरकार के प्रयास

- भारत सरकार आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स, डिजिटल मैनुफैक्चरिंग, बिग डेटा इण्टेलिजेन्स, रोबोटिक्स, रियल टाइम डेटा और क्वाण्टम कम्युनिकेशन के क्षेत्र में शोध, प्रशिक्षण, कौशल, विकास आदि को बढ़ावा देने की योजना बना रही है।
- G-20 के सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री ने डिजिटल अर्थव्यवस्था एवं आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के महत्त्व को रेखांकित किया। आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स प्रौद्योगिकी का लाभ आम जनता तक पहुँचाने के उद्देश्य से नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया है, जिसमें सरकार के प्रतिनिधि के अतिरिक्त शिक्षाविद व उद्योग जगत के प्रतिनिधि भी शामिल हैं।
- नीति आयोग राष्ट्रीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर रहा है। साथ ही नीति आयोग आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स द्वारा देश में व्यवसाय करने के तरीके को बदलने एवं गूगल कम्पनी के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने जा रहा है। केन्द्र सरकार ने उद्योग जगत से भी आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के लिए एक मॉडल बनाने हेतु सहयोग की अपील की है।
- आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने 7 सूत्री रणनीति तैयार की है, जिसमें इस तकनीकी के सन्दर्भ में शोध व विकास को बढ़ावा, सुरक्षा, नैतिक, विधिक व सामाजिक पहलुओं का ध्यान आदि को प्रमुख स्थान दिया गया है।

निष्कर्ष

वर्तमान युग में आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू हैं। विकास के लिए आज इसकी आवश्यकता है, परन्तु इसको लेकर हमें सावधान भी रहना होगा, क्योंकि यह मानव समाज के लिए खतरा भी हो सकता है। अतः इस प्रौद्योगिकी को अपनाने से पहले इस पर पर्याप्त शोध किया जाना चाहिए, साथ ही प्रशिक्षण कार्यक्रम पर भी बल दिया जाना चाहिए, जिससे इससे शत-प्रतिशत लाभ उठाया जा सके और राष्ट्र के विकास को गति प्रदान की जा सके।

www.zonetech.in

ZONE TECH
Best Institute For Assistant & Junior Engineer

